– चतुर्थ अध्याय –

नरेन्द्र कोहली की कहानियों की विशेषताएँ

4. नरेंन्द्र कोहली की कहानियों की विशेषताएँ

कोहली जी ने अपने कथानकों में व्यक्ति की आस्था, संकल्प, जीजीविषा और अन्तःप्रकृति के साथ-साथ उसके बाहय संघर्ष का चित्रण बड़ी सफलतापूर्वक हैं.। कोहली जी ने अनुभव के प्रामाणिकता के वल पर समाज और व्यक्ति की समस्याओं को देखना पसंद किया हैं। निम्न और उच्च वग्र की तुलना में उन्होंने मध्यवर्ग की से ही सम्बन्धित कहानियाँ लिखी हैं। उनके कथा साहित्य में नये शिल्प का आग्रह मिलता हैं। नया शिल्प और नया प्रयोग मानव भूत की तरह हमेशा नरेन्द्रजी पर सवार रहता हैं। जिस कारण रस भंग का दोष उनके कथा साहित्य में यथातथा दिखायी देता हैं। जैसें **"होने वाली पत्नी"** । उन्हों ने आधुनिक युग के बदलते, टूटते, बनते, बिखरते सम्बन्धो के अनेक पहलूओं की अपनी कहानियों का आधार भी बनाया हैं। प्रत्यः उनकी सभी कहानियाँ एक विशेष मनस्थिति को लेकर ही चलती हैं। कोहली जी ने अपनी अनेक कहानियों में नारी रुढीबध्द को मुकत करने के लिए उसके प्रति पूरी सहानुभूंति रखते हुए स्वार्थी पुरुषवर्ग को फटकारा हैं। जैसे "मालिनी"। उन्होने अपनी कहानियों के लिए छोटे-बडे, लघु-दीर्घ, संक्षिप्त विस्तृत सभी प्रकार के ऐसे शीर्षक चुने है जो नवीन, मौलिक एवं सांकेतिक हैं। लेखक ने मध्यवर्ग के ऐसे पात्रो का चरित्र-चित्रण अधिक किया है, जो घूटन व कुष्ठा में ही जीवन का सुख स्वीकारते हुए तथा वैयक्तिक समस्याओं में ही संलग्न दिखायी देते हैं कुछ पात्र आत्मपीडावादी, कुछ अस्तित्ववादी, कुछ अस्थावादी, तो कुछ जीवन संघर्ष में रन सहकर भी उससे मुक्ति पाने के लिए सतत प्रयास करते हुए दिखायी देती हैं।

कोहली जी ने आनी कहानियों में देशकाल की अपेक्षा, परिस्थिति चित्रण की ओर अधिक ध्यान दिया है.। वह मनोविज्ञान के परिवेश कल्पना से अत्याधिक प्रभावी रहा हैं। उसने परिवेश के व्दारा ही व्यक्ति की बाहय, सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति उसकी शिक्षा-दिक्षा, उसका रहन-सहन, उसके रीति-रिवाज अथवा उसके संस्कारों का निरुपण किया हैं.। उन्होंने प्रायः जैसे अनुभव किया है उसे उसी रुप में अपनी सरल एवं स्वाभाविक भाषा में व्यक्त किया हैं।

नरेन्द्रजी की आरंभिक कहानियां काफी आत्म-केन्द्रित रही हैं. उसकी सामग्री उन्होंने अपने परिवार और निकट संबंधियों के व्यक्तिगत जीवन से ली हैं। आरम्भिक कहानियों में घटनाओं के नाटकीय संयाजन सें, विसंगतियों तथा दोहरे मान-दंडों पर प्रहार करना ही उनका उदयेश्य था। "सारिता" में "नये अंकुर" के अनार्गत उनकी एक कहानी "पानी का जग, गिलास

और केतली" छपीं1 और फरवरी 1960 की "कहानी" में "दो हाथ" छपी, जिसे अक्सर उन्होने अपनी पहली प्रकाशित कहानी माना हैं।

9 अक्टूबर 1965 ई. को उनका विवाह हुआ। विवाहोंपरांत आंरभिक झगड़े ओर मतभेद होते रहे, पर उन्होंने कभी कोई गंभीर मोड़ नहीं लिया। इस काल में लेखनी कुछ अधिक चल पड़ी। "परिणति", "दूसरे कगार का निषेध इ. कहानियाँ इन्हीं दिनों में लिखीं। 1966 में पहली बच्ची हुई और चार महीनों के पश्चात् उसका देहांत हो गया। उन्हीं अनुभवों पर "किरचें", "दूसरी आया", और "साथ सहा गया दु:ख" इ. रुचनायें लिखी गई। "दि कालेज भी उन्हीं दिनों की उपज हैं। व्यंग्यात्मक दृष्टि का थोडा-बहुत विकास इन्ही दिनों में हो गया था।

नरेन्द्रजी के आरंभ के दस वर्षो के लेखन से चुनी हुई कहानियो का पहला संग्रह "परिणति" हैं। जीवन के झूठ और रोमांस को तीखी कलम से छील-छोतकर यथार्थ जीवन को उकेरनेवाली कहानियां इसमें संकलित है। "कहानी का अभाव" यह "संपूर्ण कहानियां" श्रृंखला का पहला खंड हैं। लेखक की आंरभिक कहानियां, जिसमें किशोर-मन के प्रति खुलता हुआ संसार बहुत रोचक ढंग से चित्रित हुआ हैं1 "कहानी का अभाव" कहानी की, विधा संबंधी पूर्व-मान्यताओं को सशक्त चुनौती देती हैं।1 "दृष्टिदेश में एकाएक" यह "संपूर्ण कहानियां" श्रृंखला का दूसरा खंड हैं। पारिवारिक और सामाजिक परिवेश का एक युवा दृष्टि व्दारा मर्मभेदी बेबाक विश्लेषण इसमें किया हैं। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि, इस युवा लेखक ने अपनी पिछली पीढ़ी को भी इन कहानियों में भरपूर सहानुभूति दी हैं।2 "शटल" यह "संपूर्ण कहानियां" श्रृंखला का तीसरा खंड हैं। लेखक की कुछ प्रोढ़ कहानियों का महत्वपूर्ण संकलन इस कहानी संग्रह मे किया गया हैं। "नमक का कैदी" यह 6संपूर्ण कहानियां श्रृंखला का चौथा खंड हैं। 1967-68 के दौरान लिखी गई कुछ महत्वपूर्ण कहानियों का संकलन इसमें किया गया है। "निचले फलैंट में" यह श्रृंखला का पांचवां खंड है। इसमें 1969 और 1970 के दौरान लिखी गई कहानियां हैं। समाज में बढ़ती हुई अमानवीयता के स्पष्ट चित्र और उपन्यास तत्व की वृध्दि का चित्रण किया गया हैं। "नरेन्द्र कोहलीकी कहानियां यह पेपरबैक में पहला कहानी-संग्रह हैं। छह लंबी और औपन्यासिक कहानियों का पठनीय ओर आकर्षक संकलन इसमें किया गया हैं। "संचित भूख" इसमें 1969 और 1975 के बीच लिखी गई कहानियां हैं। इन कहानियों में जन-सामान्य के मनोविान के साथ-साथ, प्रशासन की क्रूरता, परिस्थितियों व्दारा प्राड़ित लोगो की असहायता प्रमुख है।3

नरेन्द्र जी की आरंभिक कहानियां अपने परिवार तथा अपने कॉलेज की घअनाओं तथा

पात्रों पर आधारित हैं। , इन दोनों ही स्थानों पर जो लोग उनसे बड़े थे और अधिकार संपन्न थे, उनके प्रति विरोध, विद्रोह तथा व्यंग्य का भाव इन कहानियों में आ गया हैं प्रेम-कहानियाँ उन्होंने बहुत ही कम लिखी हैं। कहानियों के क्षेत्र में वे छोटी-छोटी पत्रिकाओं से उपर उठ पाए।

"नरेंन्द्र कोहली की कहानी "कहानी का अभाव" कहानी के बदलते मिजाज को अत्याधिक खूब सूरती से अभिव्यक्ति देती हैं। उसमें उन्होने अपने भैया के ही स्वभाव पर प्रकाश डाला हैं। भैया की एक-एक बात उनकी जानी-पहचानी थीं। न कहीं आना, न कहीं जाना। न किसी से दोस्ती, न किसी से बातचीत। न कोई शौक, न अभिलाषा। सीधा-सपाट चिकनी सड़क-सा उनका जीवन था। उनके जीवन में कोई उतार-चढ़ाव नही था। उनके जीवन की कोई कहानी लिखने का बिन्दु ही लेखक को नही मिला। कहानी के पारम्पारिक तत्वों के मिश्रण से रची कहानी के स्थान पर कहानी अब घटनाहीन क्षणो, व्यतिक्रम-रहित चरित्रों और आम आदमी को अभिव्यक्ति देने लगी थी। प्लॉट, क्लाइमेक्स और लंबे-चौड़े उतार-चढ़ाव की मोहताज कहानी अब नहीं रही थीं।"4 यह आयास-रहित कहानी रचना नरेन्द्र कोहली की कहानियों का सहज स्वभाव हैं। उनकी कहानियों में वे वैविध्य नहीं है जो उनके व्यंग्य निबंधों में हैं" कहानियो की धुरी या केन्द्र मध्यवर्गीय युवक है जिसकी आंख से वह संपूर्ण परिवेश पर दृष्टिपात करते हैं। इस केन्द्रीय पात्र की विकास-यात्रा नरेन्द्र कोहली की कहानी की विकास-यात्रा भी हैं।5 यह विकास-यात्रा सहज प्राकृतिक जीवन-क्रम के विकास को सूचित करनी है जो अपने सीमित घेरे से मित्रों और परिवार के सदस्यों के साथ संबंधों के धाणे बांधता हैं और अपने माध्यम से जीवनगत सामाजिक संबंधों के धागों के क्रमशः खोलता हें। विकास के इस पड़ोव के बाद दूसरा मोड़ तब आता है जब यह युवक जीवन के दायित्वों को संभावता निजी पारिवारिक अनुभवों से समाज के बदलते स्त्री-पुरुष संबंधो का विवेचन करने तक ही सीमित नहीं रह जाता प्रत्युत उसकी विस्तृत होती संवेदेनशीलता उस पीढ़ी के प्रति भी स्नेहशील एवं सहानुभूतिपूर्ण हो उठती हैं। जिनके प्रति वह विद्रोह की चेतना से युक्त हो उनके प्रति राग के सूत्र को झटककर आया था और यह आत्मविस्तार उसे उस स्थिति तक पहुँच देता है वहां परिवार, समाज, राष्ट्रीय सीमाएं छोटी पड़ जाती हैं। मनुष्य के आत्म का विस्तार अपने से परिवार परिवार से समाज ओर समाज से क्रमशः देश-काल की परिधि से मुक्त मनुष्य मात्र के प्रति होता हैं। अनुभूति के धरातल से इसी विकास-क्रम को नरेन्द्र कोहली की कहानियों मे देखा जा सकता है, और इन विविध मोड़ों को उनकी कुछ कहानियों के माध्यम से जाना जा सकता हैं।

शुरु की कहानियों में "बदतमांजी", "लोगों के बच्चे", "राजा-दशरथ के बेटे",

"गाड़ीवान", "उजड़े दयार में", आदि कहानियों को लया जाता हैं"। "लोगों के बच्चे", मौं-बाप की उस मानसिकता की दयोतक है जिसमें अपने बच्चे गुणशून्य और दूसरों के बच्चें गुणों की गांठ हैं। "मम्मी, पापा और बेबी भी उसी उपहास के कोण से लिखी गई कहानी है, जहाँ मां के अनुकूल काम करने पर बच्चा मां का है और पिता के अनुकूल काम करने पर पिता का। प्रतिकूल परिस्थितियों मे मां की दृष्टि में पिता पर गया है और पिता को दृष्टि में मां पर। यह मानसिकता किसी भी परिवार की हो सकती हैं। इसी मानसिकता में बढ़ते बच्चे वय की उस स्थिति पर आ जाते है जब मित्रों, भाई-बहनों में चुहलाता जीवन-योवन की देहली पर कदम रखता है और कभी संयुक्त परिवार में बड़े भाई-बहनों की शादी न हुए होने के कारण अपनी शादी के निश्चय के अभाव में स्थिति को त्रासद न बनाता हुआ उसमें भी रस खोजता हैं।"6 नरेन्द्रजी ने "उजड़े दयार" के रुप में उस सच को सामने लाया है, जब यौवनजन्य हिचक, संकोच पत्नी के अभाव को अभाव कहते हुए सकुचाता तो है पर संपूर्ण व्यवहार उस सच्चाई को पूरी नग्नता में उघाड़कर रख देता हैं। अपनी दृष्टि में सहानुभूति का पात्र उपहास का पात्र बनकर रह जाता हैं। उन्होंने इसमें किशोर मन की गुदगुदाहट को स्पष्ट किया हैं।

"सार्थकता", "परिणति", "दूसरी आया", "रसोई से लौटते पांव", "वेश्या का नौकर", "बला", "हिन्दुस्तानी" आदि कहानियों में खिलंदडा रोमानी युवक दायित्वों को संभालने के क्रम में पारिवारिक ताने-बाने से बने विविध सूत्रों के माध्यम से जीवन की विविध विसंगतियों, विद्रुषताओं और परिणतियों के रु-ब-रु आता हैं इसका चित्रण इन कहानियों में किया हैं। "जीवन के रोमांस की परिणति यथार्थ में होती हैं। रोमानी आवेश में प्रेमी की सामान्य सी भेंट में फेरे लेनेवाली लड़की बच्चे के मल को पोंछने के लिए सबसे ज्यादा पुरानी साड़ी उसे ही पाती हैं। लेखक ने "परिणति" इस कहानी में यथार्थ के आगे रोमांस किस सहज ढंग से दम तोड़ता हे, इसकी अभिव्यक्ति दी हैं।"7

"सार्थकता", "हिंन्दुस्तानी", "दूसरे कगार का निषेध" यह कहानियाँ भारतीय अस्मिता के खोने की कहानियां हैं। स्वतंत्रता के बाद राजनैतिक स्तर पर भले ही मोहभंग हुआ हो, व्यक्ति अवमूल्यन का शिकार हुआ हो, पर स्वतंत्रता के बाद की सबसे बड़ी डिम्बना यह हुई कि, व्यक्ति स्वतंत्र होकर भी स्वतंत्र नहीं हुआ। प्रत्युत पश्चिम की भौतिक दृष्टि का इस हृद तक गुलाम हुआ कि अस्मिता से पूरी तरह लुटा-पिटा अपनी मनुष्यता से भी हाथ धोकर जैविक धरातल को ही अपनी चरम उपलब्धि मान उसे ही गौरवान्वित करने लगा। ये कहानियां तेज-तर्रार आज के सफल-चरित्रों का प्रतिनिधित्व करतीं हैं। पर प्रच्छन्न ध्यन्यात्मक स्तर पर लेखक इन विद्रूपात्मक

स्थितियों पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता हैं। वस्तुतः ऐसी ही स्थितियों और पात्रों की उपस्थिति ने लेखक के व्यंग्य को जागृत किया हैं। "सार्थकता" में लेखक ने बोल्ड स्थितियों का चित्रण किया हैं। कमकाजी महिला आज के भारतीय परिवेश में अपनी आर्थिक स्वतंत्रता को एक विशिष्टता के रुप में ले रही है, सहजता के रुप में नहीं। ऐसी स्थिति में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में टकराव तो अवश्य आएगा। पुरुष के लिए स्त्री का आर्थिक रुप से सहयोगी होना तो काम्य है पर अहं के स्तर पर स्वीकार्य नहीं। ऐंसे में टकराहट के जिस दोर से भारतीय स्त्री-पुरुष गुजर रहे हैं उनका परिचय "दूसरी आया" और "वेश्या का नौकर" इन कहानियों में मिलता हैं। पर लेखक को टकराहट काम्य नहीं, काम्य है जीवन का "संतुलन"। संतुलन की अपेक्षा करती यह दृष्टि पारिवारिक स्तर पर सम्बन्धों के विविध आयामों को खोलती हैं। "सीमा के आर-पार", "दूसरे कगार का निषेधे" जैसी कहानियां माँ-बाप और संतान के टकराव को सामने लाती हैं, पर लेखक की परिणति अभिभावक वर्ग के आक्रमक खैये को सूचित करने के बावजूद उनके प्रति अकरुण नहीं होतीं। सम्बन्ध जड़ता की स्थिति पर नहीं पहुँचते प्रत्युत आपसी समझ का भाव अन्ततः ठोस को तरल में परिणत करती हैं।

आज संयुक्त परिवार टूट गए है और युवा पीढ़ी निरन्तर आत्म केन्द्रीत होती जा रही हैं। ऐसे समय अपनी ही संतान में माता-पिता "शटल" होकर रहते है। "शटल" कहानी आज के व्यष्टिकेन्द्रित जीवन में अभिभाविका के फालतू हो जाने का सशक्त चित्रण करने के साथ ही आत्मरत संतान के व्दारा माता-पिता को भावात्मक स्तर पर शोषित करती पीढ़ी के मौकापरस्त चरित्र को भी अत्यधिक खूबी से उभारती हैं। पहली स्थिति में अभिभावक या तो फालतू जीव होकर विवशता की नियति झेलता है या मनुष्य से पतित पशू बनकर रह जाता हैं। भावात्मक धरातल से जब तक माता-पिता और संतान के बीच राग का सूत्र अविच्छिन्न रहता है तब तक समंजन की स्थिति बनी रहती है। पर जब यह राग का कोमल सूत्र छीज जाता है, तब सब कुछ एक-दूसरे के प्रति होने और करने के बावजूद निरर्थकता ही हाथ में आती है। "दृष्टिदेश में एकाएक" का पिता अपने बेटे के प्रति कृतज्ञ इसलिए नहीं हो पाता क्योंकि बेटे के प्रयास से पिता को धुंधली दृष्टि के स्थान पर स्पष्ट दृष्टि तो मिली किन्तु इससे उजागर क्या हुआ - उसकी हीनता, कुंठा और चुक गये होने का अहसास दिलाता है।"8 बीतनी हुई पीढ़ी के सहानुभूतिपूर्ण चित्रण में लेखक भावुकता का शिकार कहीं नहीं हुआ। जिसका खतरा प्रायः बना रहता हैं। "नमक का कैदी" और "खर्च, डोयरी और अस्पताल" इसी पीढ़ी की इच्छओं और विवशताओं को मनोवैज्ञानिक धरातल से प्रस्तुत करती हैं। असुरक्षा और अभाव व्यक्ति को हिसाबी-किताबी बना

देते हैं और इस हिसाब-किताब का निरन्तर तनाव व्यक्ति को आक्रान्त किए रहता है, जो दिल के दौरों अथवा किसी अन्य मानसिक असंतुलन के रुप में व्यक्त होता हैं इस बात को लेखक ने सुंदरतापूर्वक स्पष्ट किया हैं। लेखक ने कहानियोमें संवेदना और वक्रता के अन्तर्विरोधी स्वरों को एक साथ जुटाया हैं।

"नमक का कैदी", "बूढ़ी काकी" की याद को ताजा कर देती है, पर बूढ़ी काकी में संवेदना का तत्व प्रधंन हैं। जब कि, "नमक का कैदी" में वक्रता का हैं। बूढो का स्वाद के प्रति लगाव दोनों कहानियों का सम हैं।"9 कहानी के मूल स्वर जिव्हा स्वाद की कैद और उसके लिए तरह-तरह की कलाबाजियों के जो सहज और खूबसूरत चित्रण हैं वे इस कहानी की उपलब्धि कहे जा सकतें हैं। अन्तर्विरोधी तत्व प्रत्येक मनुष्य में होते हैं पर मनुष्य की विकास-यात्रा यह सिध्द करती है कि, उसका आदर्श, उसका लक्ष्य विघटनकारी तत्वों पर विजय प्राप्त करने के प्रयास में ही रहा हैं। उसी की उपलब्धि में मनुष्यता अपनी सार्थकता की तलाश करती आयी हैं। मनुष्य की उपस्थिति होते हुए भी न होने का अहसास देने लगे तो उसका जीवन खतरें में होता हैं। यह स्थिति जिन हालात में पैदा होती है उसका हिला देनेवाला यथार्थ चित्रण "निचले फलैट में" कहानी में हुआ हैं। "निचले फलैंट में" चोर की आशंक, से भयभीत पहले माले की पत्नी पति को जगाकर सुरक्षा का आश्वासन पाना चाहती है किन्तु पति सम्पूर्ण मूल्यों को ताक में रख अपने कुतर्को से पत्नी और स्वयं को प्रवंचित करता हैं। मनुष्य आज विडम्बना का शिकार होता जा रहा हैं। वह अपनी विघटनकारी स्थितियों को भी गौरवान्वित करने लगता हैं। मनुष्य के इस जड़ीभूत आचरण के कारण ही मनुष्यता के लिए चिन्ता पैदा होती है। "किरचे" कहानी खतरे में पड़ी मानवता की मृत्यु की घोषणा नहीं है जो कहानी के ऊपरी स्तर पर महसूस हो सकता है, प्रत्युत उस मानवता की घोषणा करती है, जो अपराजेय है। इसलिए विषमतम हालात में भी वह जीवन्त रहता है।

"शालिग्राम" "कपूर" इत्यादी कहानियां लेखक के निजी रागात्मक लगाव और अपने जीवन में आये व्यक्तियों का अभिनन्दन करती है और स्मृतियो को उकेरती हैं।

निष्कर्ष

नरेन्द्र कोहलीकी "पानी का जग, गिलास और केतली", "दो हाथ", "बदतमिजी", "ान की पिपासा", "दो-ढाई और आठ", "उजड़े दयार में", इ. आरम्भिक विद्रोहात्मक कहानियां हैं। परस्पर चर्चा में किसी ने कोई रोचक घटना सूना दी, अथवा किसी की बातचीत में से कोई पक्ष उभर आया तो उसकी भी कहानी बन गई। "राजा दशरथ के बेटे" तथा "मम्मी, पापा औन उनकी

बेबी" ऐसी ही कहानियाँ हैं। उन्होने प्रेम-कथाएं बहोत ही कम लिखी थी, किन्तु आरम्भ में कुछ, रोमानी कहानियां लिखी जिसमें, "स्नेह का उदय", "संगिनी", "उसने गलत नहीं कहा था" तथा "मालिनी" जैसी कुछ कहानियाँ लिखी हैं। किन्तु इनमे कोई गम्भीर प्रेमकथा नहीं हैं। लम्बे अरसे के बाद उन्होने "कथा पुरानी मैत्री की", "त्रासदियां प्रेम की" तथा "प्रिति-कथा" इ. रचनाए लिखीं थीं। उनमें प्रेम कम, विश्लेषण और व्यंग्य ही अधिक सधन हुआ हैं। "आहत-प्यार", "भूखे बच्चे : सूखी डाली", "मेरा अपना संसार" बहुत भावुक और आहत भावनाओ की कहानियाँ हैं। उनके साथ-साथ "कहानी का अभाव", "होनेवाली पत्नी" तथा "एक ही विकल्प" परिस्थितियों की विडंबना की कहानियां हैं। "परिणति", "दूसरी आया" और "किरचे" इ. कहानियों की पृष्ठभूमि में लेखक ने अपने ही पारिवारिक घटनाओं का चित्रण किया हैं। रोमानियत को छोड़, जीवन कठोर यथार्थ के ढर्रे पर आता हैं। इसमें उन्होंने पारिवारिक सम्बन्धों की अनेक जटिलताएं अपने केंचुल खोल रखी थीं। "सार्थकता" में व्यंग्य का प्रहार किया गया हैं। "हिन्दुस्तानी" में विनोद की वक्रत यथार्थ की कटुता में बदली हुई नजर आती हैं। वृध्दावस्था के प्रति संवेदना और सहानुभूति जागी। "शटल", "दृष्टिदेश में एकाएक", "नमक का कैदी" तथा , खर्च, डायरी और अस्पताल" इत्यादि कहानियां तो उनके पिताजी से सम्बन्धित हैं। "चारहान का जंगल" भी उन्ही के जीवन में घटित एक घअना पर आधृत कहानी हैं।"10 कोहली जी ने 1969 ई. में. कहानियों से अधिक व्यंग्य लिखा। 1970-75 की अवधि में बहुत कम कहानियां लिखी।

नरेन्द्र कोहली की कहानियों का केन्द्र व्यंग्य नहीं करुणा हैं, जो जीवन को समझने की दृष्टि देती हैं। कहानियां उनके बोध की जमीन हैं। जब भी वह बोध का था समझ का कोई नया आयाम पायेगा, कहानी की जमीन विस्तृत होगीं।

इस तरह नरेन्द्र कोहली के कथा-जगत् की सामूहिक प्रवृत्ति केवल व्यंग्य अथवा मूलयों के प्रति नारी के स्तर की सहानुभूति कहीं आगे, अपने पात्रों के समय-सापेक्ष सत्यों के प्रति गहन संबध्दता की पचियक हैं। उनके पात्र जीवन से आते है, इसलिए वे न तो अतिरंजित ढंग से तार्किक हैं और न ही तथाकथित आधुनिक, अकर्मण्य, नयी कहानी दौर के चेहते नायक-सा व्यवहार करते हैं। वे न तो परिस्थिति के दास हैं और न नियंता। वे जेब में माचिस लेकर सब कुछ आमूल परिवर्तन के ख़याली मंसूबे भी नहीं बांधते, बल्कि उस संसार में जीते हैं तो सुबह, दोपहर, शाम के टुकड़ो में बटकर हमारे सामने खड़ा होता हैं।

"अपनी कहानियों मे लेखक रिश्तों मे आये अवमूल्यन अथवा मूल्यहीनता पर केवल व्यंग्य ही नहीं करता बल्कि संवेदना के धरातल पर पात्रों की मानसिकता की कहानियों में जीता हैं। अति संक्षिप्त ढंग से इसे मानवीय संवेदना का गहन रचना-संसार कहा जाता हैं।"11

आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में नरेन्द्र कोहली का स्थान :

आधुनिक कथा साहित्य वर्तमान काल की महान उपज हैं। आधुनिक काल में हिन्दी कहानी ने अपनी विकास यात्रा जारी रखी हैं। देश के स्वातत्र्योततर नये परिवेश में नये सन्दर्भों को लेकर यह भारतीय जनजीवन व्यक्ति का व्यक्ति के साथ व्यक्ति का समाज के साथ आपसी सम्बन्ध नये सिरे से स्थापित करने लगा था। जिसका प्रतिबिम्ब कम-अधिक मात्रा में हिन्दी कथा साहित्य में दिखाई देने लगा। नयी कहानी की यात्रा कुछ हृद तक प्रेमचंद जी की "कफन", "पुस की रात", "नशा" जैसी कहानियों से प्रारम्भ मानी जाती हैं। ग.मा. मुक्तिबोध, धर्मवीर भारती, मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, नरेश मेहता, अमरकान्त, रामदास मिश्र, मार्कण्डेय, फणीश्वरनाथ रेणु, शिवप्रसाद सिंह, रवीन्द्र कालिया, उषा प्रियंवदा, मन्नू भण्डारी, नरेन्द्र कोहली, सूधा अरोडा आदि आधुनिक कथा साहित्य के प्रतिथ यश लेखक है। जिन्होंने आधुनिक जीवन के यथार्थ को बड़ी खूबसूरती से पकड़ा हैं।

नरेन्द्र कोहली जी अपने देश के सिध्दहस्त कथाकार हैं। जिन्होंने अपनी कहानियो एवं उपन्यासों के माध्यम से पाइकों को चौकाने का कार्य किया। उनकी कहानियों में प्राथः आत्मनिष्ठता एवं व्यक्तिमूलक भावधारा की अभिव्याप्ती का ही प्राबल्य मिलता है। कोहली के पास ऐसी प्रतिभा है, जो यथार्थ को पहचानने की शक्ति रखती हैं। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी को नई दिशा, नई दृष्टि प्रधान करनेवाले शीर्षस्थ नये कहानीकारों में कोहली का स्थान विशिष्ट हैं। उन्होंने साहित्य सृजन को स्वधर्म के रुप मे अपना कर साहित्य के प्रति सदैव प्रतिबध्द रहने का प्रयास किया है। इसीकारण उन्हें आधुनिक हिन्दी कथासाहित्य का विशेषकर नयी कहानी का महत्वपूर्ण कहानीकार माना जाता हैं। नई कहानी को गति-प्रगति और मार्ग दिखाकर स्थापित करनेवाले मे कोहली का नाम अपरिहार्य है। आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य की नई कहानी के न केवल एक प्रणेता के रुप में अपितु उस साहित्य को समृध्द बनानेवाले प्रमुख कहानीकारों में भी कोहली जी का नाम महत्वपूर्ण हैं। जिसका उल्लेख तथा कार्य मूल्यांकन किये बीना हिन्दी कहानी साहित्य का इतिहास परीपूर्ण नहीं बन सकता।

नरेन्द्र कोहली की कहानियों में चित्रित समस्याएँ :

कोहली जी की कहानियों में विविध समस्याएँ विदयमान हैं। उन्होंने कहानियों में समस्याओं का अनुशीलन करते समय प्रमुखतः सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक समस्याओं के सन्दर्भ मे ही किया हैं। उनकी कहानियों में सामाजिक समस्याओं के अन्तर्गत नारी की विविध समस्याओं का चित्रण प्रमुखता से मिलती हैं। उनकी कुछ कहानियों में प्रेम-समस्या, पारिवारिक समस्या

अपने यथार्थ के साथ प्रकट हुई हैं। पति-पत्नी सम्बन्ध समस्यायें उनकी कहानियो की रीढ़ हैं। सम्बन्धहीनता के कारण दाम्पत्य जीवन में विविध कारणों से तनाव उत्पन्न होता है, उसे कोहली ने सूक्ष्मता के साथ अंकित किया हैं। महानगरीय जीवन में व्यक्ति को अकेलापन सोंप की तरह डसता हैं। लोगों की भीडे-भाड में भी व्यक्ति अपने-आप को अकेला महसूस करता है। इस अकेलेपन की समस्या को कुछ कहानियों में स्थान मिला हैं। मध्यवर्ग की दिखावटीपन की समस्या, निम्नवर्ग की समस्या, आन्तर्जातीय विवाह की समस्या, टूटते सम्बन्धों की समस्या" चे अन्य सामाजिक समस्याएँ कोहली जी की कहानियों में चित्रित है। कोहली जी ने सामाजिक, आर्थिक समस्या को ही प्रमुखता दी हैं।

. उनकी कहानियों मे धार्मिक समस्या कुछ हदेतक मिलती हैं। अन्धविश्वास, धर्म का. आडम्बर, भविष्य वक्तव्य आदि के रुप में धार्मिक समस्या मिलती है। गरिबी, बेकारी, वर्गव्यवस्था, अर्थ वितरण, अर्थ अभाव आदि के कारण उत्पन्न व्यक्ति तथा समाज की आर्थिक समस्या को यथार्थ के साथ कथाकारने स्पष्ट किया हैं।

इन समस्याओ को देखने के बाद स्पष्ट रुप में यह कह सकते है कि नरेन्द्र कोहली मानव जीवन के विभिन्न धरातल नुसार, विभिन्न समस्याएँ चुनकर अपने साहित्य मे सम्पूर्ण सजगता के साथ प्रस्तुत करने में प्रभावशाली रुप में सफल रहे हैं। सार रूप में हम कह सकते है कि यादव जी की रचनाओं की विशिष्टता है उनके प्रामाणिक अनुभव। कोहली ने ऐसे जीवन सत्य को अपने समाज और परिवेश से प्राप्त किया हैं। जो किसी न किसी कोण से मानवीय हीत-अहित से जुड़ा हुआ है। यही अनुभूत सत्य उन्हें एक नवीन एवं स्वस्थ दृष्टिकोन से अर्जित करता हैं। यही कारण है कि, उनकी रचनाओं में जीवन के यथावत विस्तार के साथ ही संवेदनाओं को देखना अधिक पसंद किया हैं। कोहलीन के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में उनका समग्र कथा साहित्य भी उनके सीधे-सीधे और सच्चे व्यक्ति को प्रतिबिम्बित करनेवाला हैं। इसी कारण कोहली जी अपने प्रारंभिक लेखन काल से लेकर आज तक बराबर सम्मीलीत एवं लोकप्रिय रहें।

संदर्भ

1) आत्मकथ्य - कुछ, नरेन्द्र कोहली के विषय में पृ. 15

2) वही पृ. 16

3) वही पृ. 17

4) उपाध्याय नर्मदाप्रसाद - व्यक्तित्व एवं कृतित्व - .नरेन्द्र कोहली पृ. 29

5) वही पृ. 30

6) वही पृ. 31

7) वही पृ. 31

8) कोहली नरेन्द्र - समग्र कहानियाँ भाग - 1 - प्रस्तावनासे

10) उपाध्याय नर्मदाप्रसाद - व्यक्तित्व एवं कृतित्व पृ. 37

11) कोहली नरेन्द्र - समग्र कहानियाँ भाग - 1 - प्रस्तावनासे